* बालक का संज्ञानात्मक विकास (जिन पियाजे के संदर्भ में)

* संज्ञानात्मक विकास (cognitive Development) :-

Introduction :- जब बालक जन्म लेता है तो उस समय वह एक अज्ञानी एवं अबोध रहता है, लेकिन जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती जाती है तब वह वातावरण के साथ समायोजन करना सीख जाता है, जिस कारण अपनी आस-पास के वातावरण में पाई जाने वाली वस्तुओं के बारे में जानने की तीव्र जिज्ञासा करता है।

अतः संज्ञानात्मक विकास का संबंध बालक के मस्तिष्क से होता है जिसके माध्यम से वह विभिन्न प्रकार के पार्थों या वस्तुओं को जानने की जिज्ञासा रखते हुए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है तथा बाह्य जगत से अवगत होता है ताकि वह अपने संज्ञान को बढ़ाकर संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सके।

* संज्ञान का अर्थ (Meaning of cognition) :-

संज्ञान (cognition) का अर्थ होता है किसी भी व्यक्ति का अपने स्वयं के विषय में और वातावरण के विषय में विचार, ज्ञान, व्याख्या, बोध या धारण करने का भाव रखना। अर्थात बालक प्रकृति, पर्यावरण तथा अपने जीवन के बारे में किस प्रकार ज्ञान प्राप्त करता है या यह भी कहा जा सकता है कि - संज्ञान बालक के मानसिक क्रियाओं में समाहित प्रक्रियाएं जैसे प्रत्यक्षीकरण, समस्या-समाधान, चिंतन, स्मरण, कल्पना तथा भाषा विकास आदि का व्यवस्थित रूप है।

अतः संज्ञान एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है, इसका विकास जन्म के बाद ही प्रारंभ हो जाता है जिसके कारण बालक वातावरण को समझने का प्रयास करता है और उसके अनुरूप व्यवहार करता है।

* संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा —:
(Concept of Cognitive development)

संज्ञानात्मक विकास को सर्वप्रथम स्वीट्ज़रलैण्ड के जीन पियाजे ने अपने सिद्धांतों के माध्यम से स्पष्ट किया है, इनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास वह ज्ञा.. जिसे प्राणी अपने वातावरण से प्राप्त करता है। अनेक मानसिक प्रक्रियाओं की सहायता से बालक अपने वातावरण से संबंधित ज्ञान प्राप्त करता है इस प्रकार वातावरण से अर्जित या प्राप्त ज्ञान द्वारा बालक के अंदर विशेष प्रकार की मनोवैज्ञानिक संरचनाओं का निर्माण होता है इन्हीं अर्जित ज्ञा.. के भंडार को पियाजे ने स्कीमा कहा है।

नोट-: स्कीमा - बालक द्वारा वातावरण से अर्जित नई-नई ज्ञानकारियों का भंडार अर्थात आयु वृद्धि के साथ-साथ ज्ञान के भंडार (स्कीमा) का स्वरूप भी परिवर्तित एवं परिमार्जित होता है।

अतः पियाजे का मानना है कि बालक का संज्ञानात्मक विकास विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है इसलिए इसके संज्ञानात्मक सिद्धांत को 'अवस्था' सिद्धांत (Stage Theory) भी कहा जाता है इसे निम्न बिंदुओं द्वारा समझा जा ...

बोलने के लिए —: संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में जीन पियाजे का नाम तत्कालीन मनोवैज्ञानिकों में सर्वाधिक प्रभावशाली रूप लिया जाता है। पियाजे का जन्म 9 Aug 1896 को स्विट्ज़रलैण्ड में हुआ था। 22 years की आयु में उन्होंने Biology विषय से की उपाधि प्राप्त की इसी दौरान उन्होंने विभिन्न आयु के बच्चों के द्वारा अपने चारों ओर के बाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया का गहन अध्ययन आरंभ किया। साथ ही उन्होंने अपने ही तीनों बच्चों के मानसिक विकास से संबंधित दाण-प्रतिदाण का विस्तृत और गहनता से अध्ययन का उनके

(इन्हें विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक भी कहा जाता है)

के आधार पर विकासात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में 400 से अधिक पुस्तकों एवं लेखों का प्रकाशन किया 16 sep 1980 को इनकी मृत्यु हो गई।

पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धांत के प्रमुख प्रत्यय :-

- (1) अनुकूलन (Adaptation)
- (2) साम्यधारणा (Equilibration)
- (3) संरक्षण (Conservation)
- (4) संज्ञानात्मक संरचना (cognitive structure)
- (5) मानसिक संक्रिया (Mental operation)
- (6) स्कीम्स (schemes)
- (7) स्कीमा

(1) अनुकूलन :- पियाजे के अनुसार बालकों में वातावरण के साथ सामन्जस्य करने की जन्मजात प्रवृति (Innate Tendency) होती है, जिसे अनुकूलन कहते हैं। अनुकूलन की प्रक्रिया के अंतर्गत बालक आत्मसात्करण तथा समायोजन के माध्यम से सीखता है।

आत्मसात्करण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक समस्या के समाधान के लिए या वास्तविकता से समायोजन करने के लिए पूर्व में सीखी गई मानसिक क्रियाओं का सहारा लेता है जैसे शिशु का किसी वस्तु को उठाकर मुँह में रख लेना।

इसमें यदि कोई बालक जानता है कि कुत्ते का चार पैर होता है परन्तु एक बिल्ली को देखकर अपने मानसिक जानकारियों के माध्यम से बिल्ली की कुछ अलग विशेषताओं पर गौर करता है तो यह समायोजन है।

(2) साम्यधारणा :- पियाजे का कहना है कि साम्यधारणा आत्मसात्करण एवं समायोजन के बीच संतुलन कायम करने की प्रक्रिया है। अर्थात् जब बालक के सामने ऐसी परिस्थिति या समस्या आती है, जिसका उसे कभी अनुभव नहीं था तो उसमें एक तरह का संज्ञानात्मक असंतुलन उत्पन्न होता है जिसे दूर करने हेतु वह आत्मसात्करण एवं समायोजन दोनों क्रियाओं द्वारा संतुलित करने का प्रयास करता है।

(3) संरक्षण (conservation) :- संरक्षण से तात्पर्य में परिवर्तन और स्थिरता दोनों को पहचानने व की क्षमता तथा किसी वस्तु के रूप-रंग में परिवर्तन उस वस्तु के तत्व में परिवर्तन से अलग करने से होता है।

(4) संज्ञानात्मक संरचना (cognitive Structure) :- किसी बालक का मानसिक संगठन या मानसिक क्षमता के सेट को संज्ञानात्मक संरचना कहा जाता है।

(5) मानसिक संक्रिया (Mental operations) :- जब बालक किसी समस्या के समाधान पर चिन्तन करता वह मानसिक संक्रिया करते समझा जाता है अतः पि के सिद्धांत में मानसिक संक्रिया चिंतन का एक प्रमुख है इसलिए यह कहा जा सकता है कि संज्ञानात्मक की संक्रियता (Action) ही मानसिक संक्रिया है।

(6) स्कीम्स (Schemes) :- बालक के व्यवहारों का सं पैटर्न जैसे - बालक जब स्कूल जाता है तब वह अपना कि कॉपी, वर्ग-क्रम के अनुसार रखता है, स्कूल ड्रेस प है, धुला, पहनता है इत्यादि, यही संगठित पैटर्न स्कीम्स ~~कहते है~~। कहलाता है।

(7) स्कीमा (Schema) :- पियाजे का स्कीमा से ता एक ऐसी मानसिक संरचना से होता है जिसका समान्यीकरण किया जा सके। अर्थात् वातावरण से जो भी नये ज्ञान बालक अर्जित करता है वह स्कीमा है और उसी ज्ञान के अनुरूप व्यवहार करता है। (जैसे नई-नई वस्तुओं और बातों की जानकारी प्राप्त करना)

(8) विकेंद्रण (Decentering) :- किसी वस्तु या चीज के बारे में वस्तुनिष्ठ या वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता ही विकेंद्रण है।

अर्थात 2 वर्ष या इससे अधिक आयु के बच्चों में किसी भी वस्तु या चित्र के बारे में वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता विकसित होना। जैसे चित्र के माध्यम या वास्तविक रूप से वस्तुओं की पहचान कराना।

* **संज्ञानात्मक विकास की परिभाषा :-**

* **पियाजे के अनुसार :-** "बच्चे जैसे-जैसे अपने संसार को कुशलता से खोजते हैं वे अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं।"

* **इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार :-**

"संज्ञान के अन्तर्गत उन समस्त प्रतिक्रियाओं की गणना की जाती है, जिनका संबंध किसी ज्ञानात्मक अनुभव से होता है।"

* **पियाजे के अनुसार :-** "संज्ञान विकास की अवधारणा एक अनुक्रिया से दूसरी आयु न देकर बालक द्वारा चाही गई अनुक्रिया तक पहुँचने की निश्चित प्रगति है।"

* **संज्ञानात्मक विकास की विशेषताएँ :-**

(Characteristics of cognitive Development)

- विशाल बौद्धिक रुचियाँ (widened intellectual Interests)
- समय भावना का विकास (Development of Time Sense)
- चिह्न तथा संकेत प्रयोग करने की अधिक योग्यता (Increasing Ability to ~~sign~~ sign and symbol)
- योजनाएँ बनाने की अधिक योग्यता (Increasing Ability to make plans)

→ ध्यान में वृद्धि (Increase in Attention)

→ अद्‌भुत प्रश्नों में वृद्धि (Increase in cu questions)

→ संवेदात्मक विकास में वृद्धि (Increase in se Development)

→ काल्पनिक संसार में वास्तविकता लाने की शक्ति (Increase in Import of Reality into the world of Imagination)

→ भाषा विकास में वृद्धि (Increase in Langu Development)

→ अमूर्त विचार की योग्यता (Ability to Deal with Abstractions)

→ विचारों को समझने की योग्यता (Ability to Deal with Ideas)

→ निर्णय लेने की योग्यता (Ability to make Dec

→ बौद्धिक विचार-विनिमय की योग्यता (Capicity for Intellectual communication)

→ रचनात्मक कार्यों में वृद्धि (Increase in creative work)

→ नैतिकता के विकास में वृद्धि। (Increasing Development of morality)

* बालक के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक —:

→ (1) भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण

→ (2) सक्षमता (competence)

→ (3) तार्किक चिंतन (Logical thinking)

→ (4) पूर्व अनुभव (post Experience)

(1) भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण :- बालकों पर भौतिक और सामाजिक पर्यावरण या वातावरण का उसकी संज्ञानात्मक प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक वातावरण में विद्यमान विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का अवलोकन करते हैं तथा उनसे समायोजन स्थापित करते हैं।

इसी प्रकार समाज के विभिन्न व्यक्तियों, जाति, धर्म और समुदायों के नये-नये विचारों से अवगत होकर समायोजित होते रहते हैं जिससे उनके संज्ञानात्मक ज्ञान में वृद्धि होती है।

(2) सक्षमता (Competence) :- बालक का वातावरण से प्रभावशाली अंतःक्रिया करके समायोजन स्थापित करना ही सक्षमता कहलाती है।

अतः व्यक्ति में आत्म-विश्वास, आत्म-नियंत्रण, उत्साह, वास्तविकता का ज्ञान, समस्या-समाधान की योग्यता, संवेगों की प्रबलता आदि विशेषताओं का विकास सक्षमता के कारण ही होता है और सक्षमता के कारण ही बालक नवीन समस्याओं को हल करके तरह-तरह से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करके अपने संज्ञान को बढ़ाता है।

(3) तार्किक-चिंतन (Logical thinking) :- बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, उसकी तार्किक क्षमता विकसित होती जाती है अर्थात बालक तरह-तरह की बातों को जानने, उस पर माता-पिता से तरह-तरह का प्रश्न पूछने का प्रयास करता है।

अतः पियाजे ने अपने सिद्धांत में यह समझाने का प्रयास किया है कि बालक किस प्रकार अतार्किक चिंतन करते-करते तार्किक रूप से प्रौढ़ बन जाता है।